S. S. College, Jehanabad

Class – B.A. Part II (Hons.)

Subject – Psychology Paper – IV

(Systems of Psychology)

Teacher's Name – Dr. Viveka Nand Sharma

e-content for three days	Date – 17.06.2021
	18.06.2021
	19.06.2021

Topic – Psychoanalytic School

Contributions of Carl Jung (1875–1961)

मनोविज्ञान के विकास में विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान (Analytical Psychology) की महत्वपूर्ण भूमिका रही है और इसके प्रवर्तक Freud के एक प्रमुख शिष्य Carl Jung थे। Freud के स्वप्न विश्लेषण से सम्बन्धित विचारधाराओं से प्रभावित होकर 1907 ई० में Freud के पास Vienna गये और इस तरह इन दोनों के बीच महत्वपूर्ण सम्बन्ध स्थापित हो गया। लेकिन इन दोनों के बीच मतभेद की शुरुआत 1909 ई० में उस समय हुई जब Freud के साथ Jung अमेरिका के Clark University में व्याख्यान देने के लिए गए जहाँ पर इन्होंने Freud के लैंगिक सम्बन्धी विचारधारा पर आपत्ति प्रकट की। यहीं पर Jung को 'International Psychoanalytic Association' के अध्यक्ष नियुक्त किए गये और इस पद पर Jung 1914 ई० तक बने रहे। Jung अपने व्याख्यानों में एक निश्चितता के साथ Sex पर अधिक जोर नहीं देते थे जिसके फलस्वरूप Freud से इनका मतभेद बढ़ने लगा और इन्होंने Freud से विच्छेद अलग होकर विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान (Analytical Psychology) की स्थापना की। इसके बाद

SHOT ON REDMI Y3
AI DUAL CAMERA

Freud से इनकी मुलाकात कभी नहीं हुई। Freud एवं Jung के बीच मतभेद का महत्वपूर्ण कारण कामप्रवृत्ति (Libido) के स्वरूप एवं उनके अभिव्यक्तियों से सम्बन्धित था। इन्होंने Adler के समान ही Freud के कामशक्ति के सम्प्रत्यय को अस्वीकार कर दिया और मानव व्यवहारों की व्याख्या अपने ढंग से की। इस तरह Jung का Freud से मतभेद होने का मुख्य कारण कामशक्ति से सम्बन्धित विचार है। Jung के Analytical Psychology से सम्बन्धित प्रमुख दृष्टिकोणों की संक्षिप्त व्याख्या निम्नांकित है (Wolman, 1960) :-

① <u>कामशक्ति (Libido)</u> :-

कामशक्ति के स्वरूप के वर्णन को लेकर ही Jung एवं Freud के बीच 1912 ई० में मतभेद हुए जब Jung ने "The Psychology of The unconscious" नामक पुस्तक प्रकाशित की। इस पुस्तक में इन्होंने स्पष्ट रूप से बतलाया कि वे कामशक्ति के सम्प्रत्यय को मानते हैं लेकिन उनका सम्प्रत्यय यौनवादी नहीं है बल्कि फ्रांसीसी दर्शनशास्त्री Henri Bergson के elan vital (प्राणाधार) के सम्प्रत्यय से प्रभावित है। Jung ने काम-शक्ति के सम्प्रत्यय को स्पष्ट करते हुए कहा कि यह एक सामान्य जैविक ऊर्जा है जो समस्त जीवन-प्रक्रियाओं को संचालित करती है। इन्होंने कभी-कभी कामशक्ति का प्रयोग मन:ऊर्जा (Psychic energy) के रूप में भी किया है। Jung की मन:ऊर्जा न तो Freud के कामशक्ति जैसी रही और न ही Adler की स्वार्थात्मक शक्ति जैसी रही। इन्होंने यह बतलाया कि मन:ऊर्जा का प्रयोग व्यक्ति पहले अपनी रक्षा एवं अपनी जाति की सुरक्षा में करता है और जब यह जैविक आवश्यकताएँ पूरी हो जाती हैं तो

एवं रचनात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने में लगाता है (Wolman, 1960) | Jung ने यह बताया कि शारीरिक ऊर्जा ही मानसिक ऊर्जा का रूप ले लेती है और दोनों प्रकार की ऊर्जायें या शक्तियाँ एक दूसरे में परिवर्तनीय हैं। इन्होंने अपने विचार तंत्र में विरोध नियम (Principle of opposites) का प्रतिपादन किया जो यह बतलाता है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में दो विरोधी तत्व पाये जाते हैं अर्थात् रचना एवं विनाश दोनों शक्तियाँ एक साथ काम करती हैं। व्यक्ति के जीवन में उन्नति अवनति, उतार एवं चढ़ाव, नम्रता एवं कठोरता इत्यादि विरोधी तत्व हो सकते हैं और इन विरोधी तत्वों में जितना अधिक संघर्ष होगा उतनी अधिक शक्ति इनमें संतुलन लाने के लिए शरीर पैदा होगी। इस तरह शक्ति निर्माण आन्तरिक संघर्षों पर निर्भर करती है। Freud के समान ही Jung ने यह बतलाया कि मानसिक ऊर्जा को नष्ट नहीं किया जा सकता है और इसका स्वरूप कुछ ऐसा होता है कि इसे हस्तांतरित किया जा सकता है या विस्थापित हो सकता है और इसे परिष्कृत किया जा सकता है। मानसिक ऊर्जा मुख्य रूप से दो नियमों द्वारा नियंत्रित होती है जिसे तुल्यता का नियम (Principle of equivalence) तथा ऊर्जा-अनुपलब्धता (Principle of entrophy) कहते हैं। तुल्यता का नियम यह बतलाता है कि यदि ऊर्जा एक स्रोत से हटायी जाती है तो दूसरे स्रोत में प्रकट हो जाती है। Principle of Entrophy यह बतलाता है कि ऊर्जा कभी-कभी इस्तेमाल के लिए उपलब्ध नहीं हो पाती है और यदि किसी स्रोत में काम-शक्ति (Libido) अधिक मात्रा में उत्पन्न होती है तो काम शक्ति अधिक मात्रा वाले स्रोत से कम मात्रा वाले स्रोत की ओर बढ़ने लगता है। इन्होंने Libido की गति को निर्धारित करने वाले दो नियमों का उल्लेख किया जिसे अग्रगमन (Progression) तथा प्रतिगमन (Regression) कहते हैं। जब व्यक्ति में

SHOT ON REDMI Y3
AI DUAL CAMERA

प्रतिद्वन्दी शक्तियाँ संतुलित होती हैं तो मन भी एक संतुलित अवस्था में रहता है। ऐसी स्थिति में Libido आगामी से व्यक्ति की अचेतन मन से चेतन मन की ओर गति होता रहता है। इसे ही Progression की संज्ञा दी जाती है। इस दशा में व्यक्ति को सुख एवं आनन्द की अनुभूति होती है। Jung ने इसे vital feeling की संज्ञा दी है (Wolman, 1960)। इसके विपरीत कुछ परिस्थितियों में काम-शक्ति का Progression रुक जाता है और प्रतिद्वन्दी शक्तियाँ एक दूसरे का सहयोग छोड़कर अलग हो जाती हैं जिससे मानसिक संघर्ष शुरू हो-जाता है। यही प्रतिगमन (Regression) की स्थिति है जिसमें बड़ी मात्रा में तनाव उत्पन्न होती है और vital feeling घट जाता है, चेतना कुछ के कुछ विचारों का मानसिक शून्य आविर्भूत होने लगता है और परिस्थिति विघटित हो जाती है।

(2) प्रतीकों (Symbols):- Freud के समान ही Jung ने Symbols का उल्लेख किया है लेकिन-दोनों में स्पष्ट अन्तर है। Jung ने यह बतलाया कि-जब Libido द्वारा जैविक आवश्यकताएँ पूरी हो जाती हैं और कुछ शक्तियाँ बच जाती हैं तो उस व्यक्ति की मानसिक शक्ति उस अवशिष्ट Libido को सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक प्रयासों में बदल देती है। इसके अनुसार वह प्रक्रिया जिसके द्वारा Libido का रूप बदल जाता है, उसे प्रतीक कहते हैं। प्रतीकों से अज्ञात विचारों का परिचय मिलता है क्योंकि इनका जन्म अचेतन से होता है। जब प्रतीक अचेतन मन से चेतन मन में आ जाते हैं तब Ego उन्हें स्वीकार कर लेता है और व्यक्ति के सांस्कृतिक एवं सृजनात्मक क्रियाकलाप द्वारा निर्देशित होने लगता है।

SHOT ON REDMI Y3
AI DUAL CAMERA

(3) चेतन (The Conscious): — Jung ने मन (Psyche) के तीन भाग बतलाये हैं — चेतन, व्यक्तिगत अचेतन एवं सामूहिक अचेतन। चेतन एवं अचेतन दो विरोधी व्यवस्थायें हैं जो आपस में एक दूसरे का संतुलन बनाए रखते हैं। जब मन के चेतन एवं अचेतन भाग के बीच तनाव की स्थिति उत्पन्न हो जाती है तो मानसिक उलझन उत्पन्न हो जाती है। Jung के विचार में चेतन मन अचेतन मन की अपेक्षा थोड़ा भाग होता है और इसकी वास्तविकता में समायोजन करने के लिए चेतन ज्यादा उपयोगी होता है। Jung ने यह भी बतलाया कि चेतन के केन्द्रीय भाग में उच्च श्रेणी की क्रियायें होती हैं जिसे Ego कहा जाता है। Ego चेतन का प्रतिनिधित्व होता है और साथ ही साथ बाहरी दुनिया के प्रति मानसिक क्रियाओं के निर्देशन करने में सहायक होता है।

(4) स्वप्न एवं व्यक्तिगत अचेतन (Dreams and the personal unconscious): — Jung ने स्वप्नों का सम्बन्ध व्यक्तिगत अचेतन से बतलाया है। व्यक्तिगत अचेतन, अचेतन की ऊपरी सतह है जिसके नीचे अचेतन की गहरी परतें होती हैं। व्यक्तिगत अचेतन में सभी प्रकार की विस्मृत स्मृतियाँ, चुभते अनुभव एवं दमन या गये विस्मृत अनुभव सम्मिलित होते हैं। इसके अतिरिक्त कल्पनायें, स्वप्न, व्यक्तिगत अनुभव इत्यादि अचेतन के इस ऊपरी भाग में पायी जाती हैं। स्वप्न के बारे में Jung का विचार Freud के विचारों से अलग है। Freud के विचार में स्वप्नों के माध्यम से व्यक्ति के दमित लैंगिक इच्छाओं की अभिव्यक्ति होती है, जबकि Adler के विचार में स्वप्न के द्वारा व्यक्ति के भावी उच्च लक्ष्यों का संकेत मिलता है ... ने की आकांक्षा रहती है। Jung ने दोनों के विचारों को स्वीकार किया लेकिन इन दोनों

SHOT ON REDMI Y3
AI DUAL CAMERA

Adler से आगे बढ़कर कुछ कहा कि व्यक्ति के पूर्व: जीवन में घटनेवाली घटनाओं की अपेक्षा भावना अधिक है। Jung ने स्वतंत्र साहचर्य द्वारा अचेतन के अध्ययन की विधि का विकास किया। यह प्रयोग की प्रमुख प्रश्नोत्तर विधि है जिसके द्वारा अलग-अलग शब्दों से जुड़े भावनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाता है। इस विधि के द्वारा व्यक्ति के मनोग्रन्थियों के बारे में भी पता लगाया।

(5) मनोग्रन्थियाँ (complexes):- Freud ने सबसे पहले मनोग्रन्थि के सम्प्रत्यय को प्रस्तुत किया। इनके अनुसार जब अत्यधिक मात्रा में Libido किसी अचेतन इच्छा से सम्बद्ध हो जाता है तो व्यक्ति में मनोग्रन्थि बन जाती है जिसके कारण व्यक्ति के व्यवहारों में विकृति देखे जाते हैं। Jung ने भी मनोग्रन्थियों को स्वीकार किया लेकिन इन्होंने Freud से बिल्कुल अलग ही विश्लेषण किया। Jung के अनुसार मनोग्रन्थियाँ व्यक्तित्व की स्वतंत्र इकाइयों के रूप में रहती है। जब चेतन एवं अचेतन के बीच में टकराव होता है तो मन: ऊर्जा (Psychic energy) उत्पन्न होती है। यह मन: ऊर्जा चेतन मन के नियंत्रण में नहीं रहती है। फलस्वरूप व्यक्तित्व के कुछ पहलू स्वतंत्र इकाइयों के रूप में काम करने लगता है जिसे मनोग्रन्थि कहा जाता है। इन मनोग्रन्थियों पर व्यक्ति का अपना नियंत्रण नहीं रहता है और यह मनोग्रन्थियाँ स्वप्न के रूप में प्रकट होती है। सभी व्यक्तियों में यह मनोग्रन्थि एक समान होती है क्योंकि इसका जन्म सामूहिक अचेतन से होता है। सामान्यत: व्यक्ति की मनोग्रन्थि-आपस में सामंजस्य बनाये रखती है। लेकिन कभी-कभी उनके बीच-टकराव अथवा असंतुलन उत्पन्न हो जाता है कि अचेतन की गहराइयों में स्थित आदिरूप (Archetypes) बाहर आने लगता है जिससे मनोविकृति उत्पन्न हो जाती है। व्यक्ति का प्रकट-रूप (Persona), नारी-आदिरूप (Anima), पुरुषआदिरूप

OT ON REDMI Y3
DUAL CAMERA

(animus) तथा निजछाया (Shadow) मूलतः मनो-ग्रंथियाँ ही हैं जिनकी पहचान के लिए Jung ने शब्द साहचर्य विधि का प्रतिपादन किया।

(6) सामूहिक अचेतन (Collective unconscious):- सामूहिक अचेतन Jung का सबसे महत्वपूर्ण लेकिन विवादास्पद संप्रत्यय है। इसमें आदिकालीन प्रतिमाएँ (Primordial images) संचित होती हैं तथा इसमें वे प्रवृत्तियाँ होती हैं जो बहुत प्राचीन समय से पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आती हैं। मनुष्य के पूर्वजों द्वारा पृथ्वी, सूर्य, ईश्वर के संबंध में प्राप्त होनेवाली अनुभवों इसमें संचित होती हैं। लोगों के कई तरह के धार्मिक विश्वास, दन्तकथाएँ, देवकथाएँ आदि भी सामूहिक अचेतन में ही संचित होती हैं। सामूहिक अचेतन के अवयवों को Archetype कहा जाता है। यह व्यक्तिगत अचेतन के मनोग्रंथियों से इस अर्थ में भिन्न होता है कि यह जन्मजात होता है जबकि मनोग्रंथि अनुभवजन्य होता है। समानता यह है कि Archetype भी मनोग्रंथियों के ही समान ही संवेगात्मक तत्व होते हैं।

(7) व्यक्तित्व (Personality):- Freud के समान ही Jung ने भी व्यक्तित्व को विकासात्मक प्रक्रिया का परिणाम माना। Freud का ऐसा मानना था कि व्यक्ति के जीवन की ~~शुरू~~ पूर्व बीती घटनाएँ उसके व्यक्तित्व को निर्धारित करती हैं। Jung ने भी ऐसा ही माना लेकिन Freud से एक कदम आगे बढ़कर महसूस किया कि व्यक्ति के केवल व्यक्तिगत जीवन की ही घटनाएँ नहीं बल्कि उसकी प्रजाति (race) और प्राणी-जाति (Species) के इतिहास भी उसके व्यक्तित्व को रूप देते हैं। इस तरह Jung ने व्यक्तित्व के विकास में भूत एवं भविष्य दोनों के महत्व को स्वीकार किया। Jung ने Libido (जीवनशक्ति) के दिशा के आधार पर व्यक्तित्व को अंतर्मुखी (Introvert) तथा बहिर्मुखी (Extrovert) के रूप में विभाजित किया है।

SHOT ON REDMI Y3
AI DUAL CAMERA

Jung के अनुसार अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले व्यक्ति के मन:शक्ति अन्दर की ओर निर्दिष्ट रहती है जिसके कारण स्वभाव से चिंतनशील एवं आत्म:निरीक्षणात्मक रहते हैं। ऐसे लोगों को बाहरी वस्तुओं एवं व्यक्तियों में अभिरुचि कम होती है। ऐसे लोग शर्मीले एवं संकोची होते हैं। इनमें आत्मविश्वास की भी कमी होती है। इसके ठीक विपरीत बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले व्यक्ति की मन:शक्ति बाहर की ओर फैली रहती है। ऐसे लोग बाहरी घटनाओं, वस्तुओं एवं व्यक्तियों में अभिरुचि रखते हैं। इन लोगों में सामाजिकता अधिक होती है, इन्हें मित्रों को मानते हैं और समायोजन करने वाले व्यक्ति के रूप में देखा जाता है। Jung का ऐसा विचार है कि कोई भी व्यक्ति न तो पूर्णरूपेण अन्तर्मुखी होता है और न ही पूर्णरूपेण बहिर्मुखी होता है बल्कि प्रत्येक व्यक्ति में दोनों ही प्रकार के गुण रहते हैं और लक्षणों की मात्रा के आधार पर व्यक्ति को Introvert या extrovert कहा जाता है। Jung ने इन्हीं के आधार पर Introvert तथा extrovert के चार-चार प्रकार का उल्लेख किया है। इसके अनुसार व्यक्ति चाहे अन्तर्मुखी हो या बहिर्मुखी हो वह चिंतन प्रधान, भाव प्रधान, संवेदन प्रधान या अन्तर्दृष्टि ~~प्रधान~~ प्रकार (Intuitive) में से किसी एक प्रकार का होगा। इन्होंने चिंतन एवं भाव को व्यक्ति की विवेकपूर्ण क्रिया माना और संवेदन एवं अन्त:दृष्टि को विवेकहीन क्रिया माना। इसके अनुसार व्यक्तित्व का प्रकार जन्म के समय से ही व्यक्ति में रहता है और अधिकांश लोगों में अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी गुण सन्तुलित मात्रा में होते हैं जिन्हें उभयमुखी (ambivert) कहा जाता है। व्यक्तित्व का प्रकार जन्मजात होता है लेकिन आयु परिवर्तन एवं कुछ परिस्थितियों के प्रभाव से इसमें बदलाव भी हो जाता है।

इस तरह आधुनिक मनोविज्ञान

SHOT ON REDMI Y3
AI DUAL CAMERA

के विकास में Jung का योगदान काफी महत्त्वपूर्ण रहा है। और Freud से प्रभावित होकर अनेक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया। लेकिन मनोविश्लेषण के सभी सिद्धान्तों में Jung के सिद्धान्तों की सबसे अधिक आलोचना हुई है। ~~इसके अतिरिक्त~~ इनके सिद्धान्तों के अवैज्ञानिक इनकी पद्धतियों को भी अप्रामाणिक एवं अव्यवहारिक कहकर आलोचना की गई।

आलोचकों ने Jung के विचारों की कटु आलोचना करते हुए कहा कि Jung ने जब चाहा तोड़ मरोड़कर अपने सिद्धान्त में जोड़ दिया। प्रारम्भ में इन्होंने चेतन को मूलतः विकृत माना। उसके बाद चेतन को आत्म (Self) से अभिन्न कर दिया। उन्होंने पहले Persona को चेतन-मनोवृत्ति और Anima को अचेतन मनोवृत्ति माना फिर सम्पूर्ण चेतन को Persona और सम्पूर्ण अचेतन को Anima मान लिया। पहले उन्होंने मन के दो ही स्तर माना - चेतन और अचेतन। फिर इन दोनों के बीच में एक व्यक्तिगत अचेतन स्तर की भी कल्पना कर दी। स्पष्ट है उनके विचार बदलते रहे हैं।

प्रारम्भ में Jung ने नियतिवाद (determinism) एवं अभिप्रायवाद (Purposivism) दोनों को स्वीकार किया। लेकिन 1955 ई० में इन्होंने समकालिकता को भी मानसिक घटनाओं की उत्पत्ति का स्रोत मान लिया और इसको स्पष्ट भी नहीं किया।

Jung पर एक आरोप यह भी है कि इन्होंने अपने विचारों को प्रस्तुत करने एवं बदल देने में काफी मनमानी की। अपने सिद्धान्तों के प्रतिपादन में भी विज्ञान के तार्किक नियम की भी खुलकर उल्लंघन किया। इन्होंने अपने सामूहिक अचेतन एवं आदिरूपों [illegible] में अलौकिक गुणों के [illegible] पर ही अधिक जोर दिया- जो

SHOT ON REDMI Y3
AI DUAL CAMERA

ਮਿਥਿਹਾਸ ਦੇ ਵਿਗਿਆਨ ਵਿਚ ਤਰਕ ਆਧਾਰਿਤ ਨਿਯਮਾਂ ਦੀ ਥਾਂ ਮਨੁੱਖ-ਭਾਵਨਾ ਤਰਜੀਹਾਂ ਹਨ। ਇਸ ਲਈ Jung ਨੇ ਮਨੋ-ਵਿਗਿਆਨ ਅਤੇ ਮਨੋਚਿਕਿਤਸਾ ਨੂੰ ਪ੍ਰਭਾਵਿਤ ਕੀਤਾ ਅਤੇ ਇਸ ਵਿਚ ਇਤਿਹਾਸ ਵਿਗਿਆਨ ਦਾ ਹਿੱਸਾ ਤਸਲੀਮ ਕੀਤਾ। ਮਨੋਵਿਗਿਆਨੀਆਂ ਦਾ ਧਿਆਨ Jung ਅਤੇ Freud ਦੋਨਾਂ ਵੱਲ ਰਿਹਾ ਹੈ ਪਰ Freud ਨੇ ਮਿਥਿਹਾਸਕ ਆਧਾਰਾਂ ਨੂੰ ਵਿਸ਼ਲੇਸ਼ਣ ਹੇਠ ਲਿਆਂਦਾ ਜਦਕਿ Jung ਨੇ ਮਿਥਿਹਾਸ ਨੂੰ ਹੀ ਵਿਗਿਆਨ ਮੰਨ ਲਿਆ। ਇਸੇ Wolman (1960) ਨੇ ਇਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਸਪਸ਼ਟ ਕੀਤਾ ਹੈ — "Freud looked into mythology, analyzed it and found in it the products of sick and premitive minds. Jung was enchanted by mythology and accepted it as an authentic photographic copy of the human mind. Freud found an analogy between the prelogical thinking of mythology, of Psychopathology, and of infancy. Jung accepted the content of mythology as scientific evidence in Psychology. Freud exploited myth for scientific purposes; Jung accepted my as scientific evidence."

— x — x —